CHETANA
INTERNATIONAL JOURNAL OF EDUCATION (CIJE)
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))
Impact Factor
SJIF 2023 - 7.286

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

# भारत में संचार के प्रमुख माध्यमों का बदलता स्वरूप

**राकेश कुमार शर्मा**
**व्याख्याता-राजनीति विज्ञान**
**राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, भवानी-खेड़ा (अजमेर)**
***Email: drrakeshsharma78@gmail.com, Mobile: 9982674320***

First draft received: 12.10.2023, Reviewed: 20.10.2023, Accepted: 26.11.2023, Final proof received: 31.12.2023

**सार संक्षेप**

*मनुष्य द्वारा शब्द, संगीत, हाव–भाव इत्यादि रूप से होने वाली सम्प्रेषण प्रक्रियाएँ संचार का हिस्सा है। संचार की प्रक्रिया में मानव शरीर के कई अंग संयुक्त अथवा पृथक–पृथक रूप में भूमिका निभाते हैं। इनमें मुख, हाथ, चेहरा तथा शरीर के अन्य कई अंग प्रमुख हैं। शरीर के अंग सूचना प्रवाह, सूचना की ग्रहणशीलता, सूचना प्रेषक, संचार माध्यम, संचार संपादन एवं सूचना नियंत्रक का कार्य करते है। समाज में संचार प्रवाह भाव भंगिमा या भाषा के माध्यम से ही होता है। भाव भंगिमा एक प्रक्रिया होती है जो संचार का ही रूप है। भाषा एक स्पष्ट तरह का सामाजिकसचार है और यह सभी मानव समाज में प्रभावी है। संचार मानव समुदाय के जीवन की वह धुरी है, जिसके द्वारा मनुष्य के सामाजिक सम्बन्ध का निर्माण एवं विकास होता है। संचार के बिना मनुष्य के सामाजिक जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। संचार प्रक्रिया का प्रारम्भ शिशु के जन्म से होता है और उसका अन्त मानव जीवन के अन्त से ही होता है। इस तरह संचार जीवन का अभिन्न भाग है। संचार की प्रक्रिया जीवन के इतिहास के शुरुआत से चली आ रही है। यह समाज की प्रगति का जीवन्त उदाहरण है। प्रारम्भिक आदिम मानव प्रतीकों एवं हाव–भाव द्वारा सम्प्रेषण करते थे। बाद में शब्दों को बोलकर सम्प्रेषण किया जाने लगा जो भाषा रूप में था। जैसे–जैसे तकनीकी विकास हुआ लिखे हुए शब्द व अनेक माध्यमों का प्रयोग किया जाने लगा।*

**मुख्य शब्द** : *सम्प्रेषण, सूचना प्रेषक, संचार, समाज, तकनीकी विकास, उदारीकरण आदि.*

## प्रस्तावना

मनुष्य द्वारा शब्द, संगीत, हाव–भाव इत्यादि रूप से होने वाली सम्प्रेषण प्रक्रियाएँ संचार का हिस्सा है। संचार की प्रक्रिया में मानव शरीर के कई अंग संयुक्त अथवा पृथक–पृथक रूप में भूमिका निभाते हैं। इनमें मुख, हाथ, चेहरा तथा शरीर के अन्य कई अंग प्रमुख हैं। शरीर के अंग सूचना प्रवाह, सूचना की ग्रहणशीलता, सूचना प्रेषक, संचार माध्यम, संचार संपादन एवं सूचना नियंत्रक का कार्य करते है। समाज में संचार प्रवाह भाव भंगिमा या भाषा के माध्यम से ही होता है। भाव भंगिमा एक प्रक्रिया होती है जो संचार का ही रूप है। भाषा एक स्पष्ट तरह का सामाजिकसचार है और यह सभी मानव समाज में प्रभावी है। संचार मानव समुदाय के जीवन की वह धुरी है, जिसके द्वारा मनुष्य के सामाजिक सम्बन्ध का निर्माण एवं विकास होता है। संचार के बिना मनुष्य के सामाजिक जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। संचार प्रक्रिया का प्रारम्भ शिशु के जन्म से होता है और उसका अन्त मानव जीवन के अन्त से ही होता है। इस तरह संचार जीवन का अभिन्न भाग है। संचार की प्रक्रिया जीवन के इतिहास के शुरुआत से चली आ रही है। यह समाज की प्रगति का जीवन्त उदाहरण है। प्रारम्भिक आदिम मानव प्रतीकों एवं हाव–भाव द्वारा सम्प्रेषण करते थे। बाद में शब्दों को बोलकर सम्प्रेषण किया जाने लगा जो भाषा रूप में था। जैसे–जैसे तकनीकी विकास हुआ लिखे हुए शब्द व अनेक माध्यमों का प्रयोग किया जाने लगा।

'विज्ञान एवं तकनीकी विकास के कारण संचार के रूप एवं तरीके ज्यादा विशिष्ट हो गये। टेलीफोन, रेडियो, टेलीविजन एवं इन्टरनेट प्रणालियां वर्तमान समय में सधार के विविध माध्यम है। इन संचार प्रसार के माध्यमों ने आज कान्तिकारी उन्नति के शिखर हुए हैं। इन माध्यमों द्वारा आज सम्पूर्ण विश्व परिदृश्य बदलाव सा प्रतीत हो रहा है उदारीकरण के इस युग में देशों के बीच की सीमाएं टूट चुकी है। सारा विश्व सिमट कर एक हो गया है। ऐसे में विश्व के किसी भी कोने में पल प्रतिपल घटित होने वाले राजनीतिक घटना, खेल से जुड़ी खबरें सभी के बारे में जानकारी इन माध्यमों से प्राप्त हो जाती है।

## संचार के माध्यम

नई तकनीकों पर आधारित संचार माध्यमों द्वारा ज्ञान शिक्षा व चिन्तन के नये सरोकार स्थापित हुए परन्तु उसके साथ–साथ हमारे समाज को उपभोक्तावादी संस्कृति में लपेटना इन संचार माध्यमों का विषैला प्रभाव है, जिसमें उलझकर हमारी युवा पीढ़ी अपने मूल्यों को छोड़कर तथा पश्चिमी संस्कृति तथा विचारधारा में वह गई है। जिस तरह से आज के समाज में परिवर्तन एवं विखराव दिखाई दे रहा है, वह ध्वस्त होने के कगार पर खड़ा है, जिस तरह मानवीय मूल्य मर्यादाएं टूट रही है उससे इन माध्यमों पर महत्वपूर्ण बहस छिड़ सकती है इसलिये संचार तकनीकी को मूल्यों पर आधारित होना चाहिये। इससे हमारी शैक्षणिक, भौतिक, मानसिक स्वास्थ्य एवं स्वस्थ मनोरंजन की आवश्यकताओं की पूर्ति हो सकती है।

### संचार की प्रक्रिया के लिये तीन बातों का होना अनिवार्य है

1– संप्रेषण – यानि संदेश अर्थात सूचना का होना अनिवार्य है। यह सूचना मुद्रा, ध्वनि संकेत, प्रतीक इत्यादि कुछ भी हो सकती है उसमें संवेग हो अर्थात दो से अधिक व्यक्ति में विचारों एवं भावनाओं का आदान प्रदान हो जो संप्रेषण कहलाता है।

2– दूसरी अनिवार्य आवश्यकता है उस संवेग को प्रेषित करने वाले की उपस्थिति अर्थात "संप्रेषक"

3–तीसरी आवश्यकता है ग्रहीता, जिसे प्राप्त संदेश पहुंचना है, उस तक वह स्पष्ट रूप से पहुंचे। स्पष्ट रूप में जिसके पास संदेश पहुंचता है उसे ग्रहीता अथवा हितग्राही मानते है। (1) ई. एम. रोजर्स एवं शूमेकररू–" संचार यह प्रक्रिया है जिसमें मेल एवं श्रोता के मध्य सूचना संप्रेषण होता है

लोनिस ए. एलेन– संचार में ये समस्त साधन है, जिनके द्वारा एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति तक अपने विचार को संप्रेषित करता है। दो व्यक्तियों के बीच समझदारी

की खाई पाटने हेतु यह एक सेतु है संचार में क्रमानुसार बतलाने, सुनने एवं समझने की निरंतर प्रक्रिया निहित हैं।

एडविन एमरी, फिलिप एच. ऑल्ट–सूचना, विचारों और अभिव्यक्तियों को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक संप्रेषित करने की कला का नाम संचार है।

संचार बाहक के विभिन्न माध्यम के प्रमाणिक अध्ययन के लिये हम इनको तीन समूहों में विभाजित कर सकते है––

(अ) परम्परागत माध्यम

(ब) मुद्रित माध्यम

(स) विद्युत संचालित माध्यम

(अ) **परम्परागत माध्यम**

यह वह माध्यम है जिसका उपयोग मानव आदिकाल से जनसंचार के लिए करता आया है। इसका मानब जाति के विकास से गहरा सम्बन्ध है। धार्मिक उत्सव, त्यौहार जन्म–मरण अर्थात सामाजिक सुख–दुख मे घरों की विशेष सजावट (मांडने), गाने–बजाने इत्यादि के रूप में इनका विकास हुआ। शादी–ब्याह जन्म मरण पर गाए जाने वाले लोकगीत एवं नाटक इसके उदाहरण है। मोटे रूप में इनको निम्नानुसार वर्गीकृत किया गया है–– 1. चित्रकला प्रागैतिहासिक काल में पर्वत की गुफाओं में पाए जाने वाले रेखाचित्र, शादी–ब्याह अथवा उत्सव में घर–आँगन इत्यादि में बनाए जाने वाली चित्रकला, मूर्तिकला अथवा दस्तकारी आदि ।

2. लोकनृत्य– कठपुतली छायां नृत्य, शादी विवाह, उत्सव, त्यौहार इत्यादि पर होने वाले सामूहिक नृत्य ।

3. लोकनाट्य एवं गीतः विभिन्न क्षेत्रों में प्रचलित परम्परागत गीत एवं नाटक जैसे नौटंकी, तमाशा, भवाई, रास, यात्रा, ऑकिया आदि ।

4. प्रचलित स्थानीय एवं क्षेत्रीय खेलकूदरू– कबड्डी, खो–खो, कुश्ती, मलखम, व्यायाम, नटों के खेल,जानवरों के नृत्य, खेल, जादू इत्यादि ।

5. प्राचीन राजाओं द्वारा अपनाए गए डुगडुगी द्वारा मुनादी करवाना, हरकारे द्वारा घोषणा करवाना सभा, यज्ञ, उर्स का आयोजन कर सभा को एकत्रित कर अपनी नीतियों की घोषणा करना ।

6 विविध तीर्थयात्रा, मेले, भजन, कीर्तन, अथवा धार्मिक उत्सवों का आयोजन करना (2)

भारत की जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा ग्रामीण अंचलों में बसता है, जहां ऐसे लोगों की बड़ी संख्या है जो अक्षर ज्ञान से अनभिज्ञ है। उनके पास उच्च प्रोद्योगिकी से उपलब्ध जनसंचार के आधुनिक साधन जुटाने के लिए पर्याप्त संसाधन नहीं है। ऐसे में लोग माध्यम ही जनसंपर्क का सर्वसुलभ साधन सिद्ध होते है। परंपरागत माध्यम में लोक नाट्य और लोग गीतों का विशेष महत्व है। लोक नाट्य परंपरा के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश में श्रामलीलाश तथा नोटंकी, ब्रज में रासलीला महाराष्ट्र में श्तमाशाश गुजरात मेभवाई तथा दक्षिण भारत में यक्ष नाट्य आदि लोक मंचन के नाट्य रूप है ये नाट्य रूप लोक मंच पर गायन–वादन से समचित होकर मनोरंजन के साथ–साथ जनशिक्षा का सशक्त माध्यम भी बने। (3) लोकगीतों को अध्येता देवेन्द्र सत्यार्थी ने ठीक ही कहा है कि श्लोकगीत किसी संस्कृति के मुँह बोलते मित्र है स्थानीय बोली से संपन्न लोकगीत बड़ी सहजता से मानवीय अंतर्मन की परत खोलते नजर आते है, जैसे कर्नाटक का श्उगाडी छतीसगढ का 'बस्तर' पं० बंगाल की 'मधुवाणी' आदि। इन लोकगीतों में संदेश, शिकायते दुःख दर्द, आशा–निराशा के भाव पिरो दिए जाते है भारत के लोक नृत्य भी जनता को अपने सम्मोहन में बांधकर संदेश को उनके मन में गहरे अंतः प्रवेश करा देते है जैसे पंजाब का भांगड़ा, केरल का कथकली, मणिपुर का मणिपुरी, असम का बीए उत्तरप्रदेश का कत्थक, आंध्र का भरतनाट्यम, राजस्थान का कालबेलिया आदि । कठपुतली का अभिनय देश के विभिन्न अंचलों में वहां की स्थानीय भाषा में प्रस्तुत किया जाता है कठपुतली का तमाशा अभिनय, संगीत तथा कथात्मक संवाद की सहायता से दिखाया जाता है। देश के बड़े बड़े धार्मिक तथा सामाजिक मेलों में जब भारी भीड़ जुटती है तब कठपुतली के जरिए बड़ी सरलता से प्रौढ शिक्षा, नशाबन्दी, परिवार कल्याण जैसे विषयों से संबंधित संदेश प्रसारित किए जा सकते है।

धार्मिक उत्सव पर्व और मेले भी जनसंपर्क का परंपरागत माध्यम है प्राचीन काल से ही पशु मेलों, कृषि मेलों, धार्मिक मेलों, तीर्थ मेलों तथा उत्सवों में विशाल जनसमुदाय अपने आप ही जुट जाता है। झांकिया भी जनसंम्पर्क का माध्यन है। दशहरे के अवसर पर अनेक शहरों में रथ पर धार्मिक देवी–देवताओं की झांकियों तथा तरह–तरह की सामाजिक, धार्मिक व पौराणिक कथाओं पर आधारित झांकिया प्रदर्शित की जाती है। इसके अतिरिक्त लोक कलाएँ जैसे– बिहार की मधुवनी, बृज की सॉझी आदि भी जनसंपर्क यो माध्यम माने जाते है।

## संचार माध्यम के प्रभाव

परम्परागत जनसंचार माध्यमों के प्रभाव को कोई नकार नही सकता ये निरक्षर जनसमुदाय पर भी असर डालते है। लोकनाटयों में पात्र भले ही पौराणिक या ऐतिहासिक रहे हो लेकिन उनका सम्प्रेणवाला चरित्र अत्याचार का विरोध करने के रूप में उभरा। देश को स्वतंत्र कराने में इस माध्यम ने अपने अभिनय से लोगों में जोश भरा। रामलीला एवं इस तरह के जन–जागरण सम्बन्धी लोकगीत एवं लोकनाटयों की प्रस्तुति को ब्रिटिश शासन ने गंभीरता से लिया। जनसंचार माध्यमों ने द्वितीय महायुद्ध में हिटलर के कठोर अनुशासन एवं नियंत्रण के खिलाफ जनमत तैयार करने में बड़ी भूमिका निभाई। मिना ई–इदिमाया जो रूस के कठपुतली कला विशेषज्ञ है, उनकी पुस्तक दि एडवेंचर ऑफ ए रशियन पप्पेट से लिया गया अंश जीवन्त नाटक की तुलना मे कठपुतली के प्रदर्शन का प्रभाव जनमानस पर तीन गुना अधिक होता है। विशेषज्ञों का मत हैं कि परम्परागत माध्यमों की सफलता सामूहिक मनोविज्ञान के सिद्वान्तों पर दर्शकों कल्पना द्वारा संप्रेषित होती है अन्य माध्यमों की अपेक्षा सामूहिक उर्जा एवं एकाग्रता की सम्भावना इन परम्परागत माध्यमों में देखी गई हैं। एक युग था, जब जन परम्परागत माध्यमों से सम्बंधित इन सम्प्रेषकों को सामाजिक मान्यता मिली हुई थी। समाज में इनके आदर–सम्मान का पूरा ख्याल रखा जाता था लेकिन धीरे–2 तकनीक के विकास ने इतने विकल्प खोल दिए है कि परम्परागत साधनों के विकास की ओर से ध्यान हट गया।

संसार में लेखन के प्रमाण– मेसोपोटापिया के अक्काड में मिले थे इस भाषा को अक्काडियन कहते थे। भारत में इसके प्रमाण तीसरी सदी ई.पू.(लगभग 321 ई. पू.) मिलते हैं। चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने राज्य में गुप्तचर रखे थे जो विभिन्न क्षेत्रों की रिपोर्ट भेजते थे इसके उपरान्त समग्रट अशोक ने अपने राज्य में शिलालेख स्तम्भ लगवाकर धर्म एवं अनुशासन की जानकारी देने की प्रथा प्रारम्भ की। सम्राट विक्रमादित्य के समय से पूर्व केले की छाल पर लेखन का उल्लेख मिलता है। मुगल शहंशाह अकबर के दरबार में वाकियानवीस की नियुक्ति का पता चलता है जो राज्य के विभिन्न प्रदेशों से गुप्त जानकारी भेजते थे। यूरोप मे रोमन सम्राट जूलियस सीजर (100–144ई.पू.) ने राजकीय निर्देशों को दीवारों पर लिखवाने का कार्य प्रारम्भ किया। इस प्रकार की जानकारी को एक्टा उर्येना ( हररोज की घटना) के नाम से जाना जाता था। इनमें प्रजा को निर्देश रहते थे कि उन्हें क्या करना चाहिये, कैसा आचरण करना चाहिये।

इसमें संदेह नहीं कि इस प्रकार के बुलेटिनों से हस्तलिखित समाचार पत्रों का प्रारम्भ हुआ। इसके बाद लिथोग्राफी के आविष्कार ने मुद्रण के इतिहास में एक बड़ी कान्ति ला दी, क्योंकि इसके उपरान्त यांत्रिका मुद्रण का आविष्कार हुआ। दशवी शताब्दी में चीन में पाईशेन ने चलित टाइप द्वारा मुद्रण में विकास किया जिसका श्रेय चीन एवं कोरिया को जाता है। सत्रहवीं सदी में मुद्रण की तकनीक का उपयोग व्यवसाय में होने लगा। जर्मनी ने पहला समाचार पत्र था बुलेटिन सन 1809 में निकाला इसका नाम था आविस्ता रिलेशन आर्डर जैदूंगा। एक समय मुद्रण की प्रकिया कठिन, अधिक समय लेने वाली एवं अनाकर्षक थी लेकिन बीसवीं सदी तक मुद्रण की प्रक्रिया में आमूल परिवर्तन आया आज एक साथ कम से कम समय में अधिक से अधिक संख्या में विभिन्न रंगों द्वारा मुद्रण की तकनीक ने मुदित सामग्री में एक नया अध्याय प्रारम्भ कर दिया है। प्रेस या समाचार पत्र–पत्रिकाएं विज्ञापन, पोस्टर, पुस्तिका, ब्रोशर (फोल्डर) पैंफलेट आदि जनसम्पर्क के मुद्रित माध्यम है।

भारत में यान्त्रिक मुद्रण की पहल सन 1498 में हुई जब पुर्तगालियों द्वारा पहला प्रिंटिंग प्रेस भारत लाया गया। इस प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना गोवा के सेंट पॉल मे करने का उल्लेख मिलता है। अनाधिकृत रूप से भारत में समाचार पत्र के मुद्रण का प्रारम्भ सन 1774 से हुआ। लेकिन अधिकृत रूप में भारत का सर्वप्रथम समाचार पत्र जेम्स अगस्टस हिकी ने सन 1780 में बंगाल गजट अथवा कलकता जनरल एडवर्टाइजर नाम से निकाला 1780 में ही कलकता मे बर्नॉर्ड मैसिक पीडर रीड द्वारा अंग्रेजी भाषा में इंडिया गजट नामक अखबार प्रकाशित किया गया 1821 में बंगाली में प्रकाशित संवाद कौमुदी तथा 1822 ई. में प्रकाशित निरातउलश समाचार पत्र पत्र 1822 में चन्द्रिका तथा ब्रम्हनिकल मैगजीन का प्रकाशन राजा राममोहन राय ने किया जिन्हें राष्ट्रीय प्रेस की स्थापना का श्रेय दिया जा सकता है। हिंदी भाषा का सबसे पहला समाचार पत्र उदंत मार्तड 30 मई 1826 को कलकता से ही पं. युगल किशोर शुक्ल ने प्रकाशित किया। देश में स्वतंत्रता दिलाने मे समाचार पत्रों का विशेष योगदान रहा। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने केसरी और मराठा समाचार पत्रों के माध्यम से लोगों के दिलो में नई आशा का संचार किया। बंगाल मे अरविंद घोष ने वंदेमातरम, भूपेन्द्रनाथ दत्त ने युगान्तर ब्रम्ह बांधक उपाध्याय ने सांध्य आदि के प्रकाशनों से बंगाल में जन चेतना का बीडा उठाया। शासन ने संपादकों को जेल भेजा। (5) अंबिका प्रसाद बाजपेयी, गणेश शंकर विद्यार्थी माधवराव सप्रे, बाबूराव विष्णु पराडकर माखनलाल, तथा बनारसीदास चतुर्वेदी जैसे पत्रकारों की सशका आबाज जागरूकतामयी बलिदानमयी राष्ट्रीय चेतना की संवाहक बनी।

भारतीय सांगती व्यवस्था के उन्मूलन नारी अत्याचार, साम्प्रदायिकता जैसी समस्याओं से निपटने के लिए जिस अभियान की जरूरत थी उसमें प्रताप, प्रभा, काम्हण, हिन्दी, प्रदीप, चांद, मर्यादा, माधुरी, अभ्युदय जैसी पत्र पत्रिकाओं ने ऐतिहासिक भूमिका निभाई। ये पत्र पत्रिकाएं पुनर्जागरणकालीन भारत की जनता की आशा–आकांक्षाओं और संभावनाओं की आईना बनी। 1858 में ईश्वर चन्द विद्यासागर द्वारा सम्पादित सोमप्रकाश, हिन्दू पैट्रियट 1861 में देवेन्द्रटैगोर तथा मनमोहन घोष द्वारा सम्पादित इंडियन गिरर उत्तरी भारत का किसी भी भारतीय द्वारा सम्पादित एकमात्र दैनिक था। 19वीं सदी के सातवें दशक में केशवचन्द्र सेन द्वारा सम्पादित सुलभ समाचार उल्लेखनीय है। गांधी जी द्वारा हरिजन समाचार पत्र को भी खासी लोकप्रिय प्राप्त हुई जिनकी संचार कौशल अपूर्व था। स्वाधीनता प्राप्ति के फलस्वरूप समय ने करवट ली। नव निर्माण की प्रक्रिया के तहतनवीन विश्वास और आस्थाएँ पनपी सन 1951 से 1950 तक के बीच राजनीतिक, आर्थिक घटनाकनों नेमानदीय घटनाक्रमों को झकझोरा ।

**संस्था पत्रिका**

समाचार पत्रों के अतिरिक्त संस्था पत्रिका जिसे गृह पत्रिका भी कहा जाता है, जनसम्पर्क का अच्छा माध्यम सिद्ध होती है संस्था पत्रिका किसी व्यापार संघ, औद्योगिक संस्थान अथवा राष्ट्रीयकृत उद्योग एवं बैंको द्वारा अपने कर्मचारियों, सदस्यों एवं ग्राहकों से सम्पर्क लाभ के लिए प्रकाशित की जाती है इसका प्रकाशन मुनाफे या आय की दृष्टि से नहीं किया जाता है। इसका उपयोग विशिष्ट समूह के लिये अभिप्रेत है। कभी–2 जनता के लिये भी यह लाभदायक एवं उपयोगी हो सकती है। शैक्षिक संस्थानों, स्कूलों, कॉलेज, तथा विश्वविद्यालयों से निकलने वाली पत्रिकाएं भी संस्था पत्रिकाओं की श्रेणी में आती है। इनका उद्देश्य विद्यार्थियों को अभिव्यक्तियों का मंच प्रदान करने के साथ–2 शैक्षिक जगत से जुड़े लोगों तक अपने संस्थान की प्रगति की जानकारी पहुंचाना भी होता है।

**पोस्टर और होर्डिंग्स पोस्टर**

राजा महाराज डुगडुगी, नगाडा या मुनादी करवाकर गांव–शहर की गली–2 व कोने–2 में अपना संदेश पहुंचाया करते थे धीरे–2 कागजों पर संदेश लिखकर दीवारों पर चिपकाने की प्रथा चल पडी जो छापेखाने के आविष्कार के बाद संदेश प्रकाशित करके दीवारों या बोर्डों पर चिपकाए जाने लगे। आज सरकारी नियमों और नीतियों का प्रचार करने के लिये सामाजिक सुधार का संदेश देने के लिए इनामी योजना के लिए गायन, नृत्य, नाटक आदि सांस्कृतिक कार्यक्रमों की सूचना देने के लिए खतरों से सावधान करने के लिये पोस्टरों का उपयोग किया जाता है आज पोस्टर का सर्वाधिक प्रयोग फिल्म उद्योग में चित्रपटों के प्रचार के लिए तथा राजनीतिक चुनावी अभियान में प्रत्याशी और राजनीतिक दलों के प्रचार के लिए किया जा रहा है। सरकार कुछ खास मौकों जैसे राष्ट्रीय पर्व पर पोस्टर प्रकाशित करवाती है, जैसे बाल दिवस, अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस स्वतंत्रता दिवस तथा गणतंत्र दिवस मे मौकों पर जनता में पर्यावरण सम्बन्धी जागरूकता लाने आतंकवादी गतिविधियों से सावधान रहने के राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक सदभाव बढ़ाने के लिए समय–2 पर पोस्टरों का सहारा लेती है ।

**पुस्तिका ( बुकलेट ) ब्रोशर फोल्डर**

छोटी –2 सूचना पुस्तिका या बुकलेट भी प्रचार अभियान का माध्यम होती है। व्यावसायिक दृष्टि से उपभोक्ता वस्तुओं जैसे टेलीविजन, कार, स्कूटर ए.सी. आदि के साथ कम्पनियों इस तरह की पुस्तिकाएं देती है सरकारी संस्थान व विभिन्न मंत्रालय प्रचार कार्य के लिए पुस्तिकाएं ब्रोशर और फोल्डर प्रकाशित करते हैं। प्रचार पुस्तिकाओं में सामग्री की भाषा शैली और शब्द चयन पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिये। भाषा–शैली का चयन ऐसा होना चाहिये जो तथ्यपरक सामग्री को पठनीय और रोचक बना बे। . फोटो और रेखाचित्रों या कलात्मक साज संचार से पुस्तिका को आकर्षक रूप प्रदान करना चाहिये जैसे पर्यटन या तीर्थयात्रा सम्बन्धी पुस्तिका है तो उसमे ऐतिहासिक या धार्मिक स्थलों के रंगीन चित्र समाहित कर लेने चाहिये जिससे उसका महत्व बढ सर्वो केन्द्रीय पर्यटन मंत्रालय, इंडियन एयरलाईन्स स्वास्थय मंत्रालय इस तरह की पुस्तिकाओं का उपयोग करते हैं। (7)

**विद्युत संचालित माध्यम**

विज्ञान के विकास के युग में मानव ने प्रकृति में व्याप्त विद्युत तरंगों की अपार शक्ति को खोजा विद्युत तरंगों के इस सर्वव्यापी स्त्रोत का उपयोग उसने जनसंचार के विभिन्न माध्यमों की खोज में किया इसे हिन्दी में विद्युत संचालित माध्यम या अंग्रेजी में इलेक्ट्रोनिक मीडिया कहते हैं। इस माध्यम की पहुच असीमित है दूर 2 तक जहां यातायात के कोई साधन उपलब्ध नहीं है, वहां इनकी पहुंच संभव है। यह माध्यम चमत्कार कर रहा है इसके द्वारा चांद की सैर की जा सकती हैं, ग्रहों की जानकारी प्राप्त की जा सकती हैं प्रमुख माध्यम है– टेलीफोन रेडियो, टी.वी. फिल्में, कम्प्यूटर, इन्टरनेट आदि ।

**टेलीफोन**

सन 1978 में एलैक्जेन्डर ग्राहम बेल ने जब लोगों के समक्ष टेलीफोन का प्रदर्शन किया तब उसने इस बात की कल्पना भी नहीं की थी कि यह सूचना तकनीक का इतना बडा उपहार भविष्य के लिये मानव को देने जा रहा है टेलीफोन के डिजाइन, पुश बटन आदि में समय–2 पर परिवर्तन हुए। 1919 में वायरलैस टलीफोन, 1963 में टच फोन, 1985 में स्ट्रीम लाईन का प्रारम्भ हुआ। सेलफोन की सुविधा से आगे वर्ष 2000 में मोबाईल फोन का आविष्कार हुआ मीडिया ने टेलीफोन के विकास मे कान्तिकारी तकनीकी सम्भावनाएं खोज निकाली है और उसका उपयोग समाचार, फैशन शो चिकित्सा इत्यादि ने किया जा रहा है। (8)

**रेडियो (आकाशवाणी)**

विश्व फलक पर रेडियो प्रसारण की शुरूआत उन्नीसवीं शताब्दी में हुई। सर्वप्रथम सन 1964 में जेन्स क्लार्क मैक्सवेल ने रेडियो तकनीक के प्रारम्भिक प्रयोग किये 1892 मे अमेरीका के एक शहर में बिना तारों के रेडियो का प्रसारण शुरू हुआ। वर्ष 1895 में मारकोनी द्वारा रेडियो सिग्नल भेजने का प्रदर्शन किया गया था। इसके उपरान्त रेडियो तकनीक ध्वनि आवाज, दूरी आदि मे होने वाले परिवर्तनों और शोधों से होकर गुजरती रही उसमें निरन्तर सुधार होते रहे है। भारतीय रेडियो की अपनी विकास यात्रा की शुरूआत सन 1921 से मानी जाती हैं। जब पोस्ट एण्ड टेलीग्राफ विभाग द्वारा द टाइम्स ऑफ इंडिया के सहयोग से गवर्नर सर जॉर्ज लायड के लिए पुणे का संगीत कार्यक्रम मुम्बई मे प्रसारित किया गया। भारत में रेडियो प्रसारण का पहला कार्यक्रम सन 1923 में रेडियो क्लब ऑफ मुम्बई द्वारा किया गया। 23 जुलाई 1927 को इंडियन ब्राडकास्टिंग कम्पनी की स्थापना करके प्रथम प्रसारण सेवा मुम्बई से शुरू हुई 1930 में भारत सरकार ने प्रसारण सेवा के प्रबन्ध का अधिग्रहण कर लिया और प्रसारण सेवा को इंडियन स्टेट ब्रॉडकास्टिंग सर्विस नाम दिया। 01 जनवरी 1936 को इस प्रसारण सेवा का पहला प्रसारण केन्द्र दिल्ली में स्थापित किया गया इंडियन स्टेट ब्रॉडकास्टिंग सर्विस 08 जून 1936 से ऑल इंडिया रेडियो के रूप में जानी गई।

सन् 1970 में एरपा ने नेटवर्कों के बीच सूचनाओं को भेजने के लिए एक नवाचार विकसित किया। इसके पश्चात ट्रांसमिशन कन्ट्रोल प्रोटोकॉल या इन्टरनेट प्रोटोकाल नामक एक प्रोटोकाल का विकास किया गया। इस प्रोटोकॉल द्वारा इन्टरनेट अथवा दूसरे नेटवर्कों पर एक व्यक्तिगत कम्प्यूटर दूसरे व्यक्तिगत कम्प्यूटर से समान स्तर पर संदेश अथवा साफ्टवेयर कार्यक्रमों का आदान प्रदान कर सकता है इन्टरनेट में ध्वनि चित्र आवाज आदि के लिए मल्टी मीडिया का प्रयोग हो रहा है। महानगरों और शहरों में इन्टरनेट की लोकप्रियता के कारण साईबर कैफे यानि श्अंतरिक्ष काफी हाऊस' खुल गये है।

सन् 1994 में सूचना का एक राष्ट्रीय मार्ग भारत को भी मिला। भारत में पहले इन्टरनेट कुछ समय तक एजुकेशन एण्ड रिसर्च नेटवर्क द्वारा उपलब्ध कराया जाता था परन्तु अगस्त 1995 से व्यवसायिक प्रयोग के लिये यह सुविधा "भारत संचार निगम लिमिटेड "यानि बी.एस.एन.एल. द्वारा उपलब्ध कराई जाने लगी। आज की स्थिति में बी.एस.एन.एल. द्वारा कई शहरों में आरम्भ की गई इन्टरनेट सुविधा से भारतीय लोगों को अन्तराष्ट्रीय नेटवर्क का भागीदार बनाने का अवसर मिल रहा है जिसके माध्यम से दे अपने कम्प्यूटर पर सम्पूर्ण विश्व की सूचनाओं के भंडार से मनचाही जानकारी प्राप्त करने में सक्षम हो रहे हैं। आम तौर पर इसका सर्वाधिक प्रयोग कुछ विशेष कार्यों के लिए ही होता है।

**निष्कर्ष**

इन्टरनेट से हम विविध देशों, स्थानों और विचारों की जानकारी ही हासिल नहीं करते वरन् विभिन्न देशों शहरों का भ्रमण भी कर सकते है घर बैठे ही अमेरिका, जापान इत्यादि घूम सकते हैं यूरोप का म्यूजियम देख सकते है। चांद तारों की यात्रा कर सकते ळें इन्टरनेट पर हर वस्तु एक दूसरे से जुडी हुई है अपनी खोज को कहीं से भी शुरू किया जा सकता है और लक्ष्य तक पहुंचा जा सकता है। यहां संगीत, खेल इतिहास, विज्ञान शब्द कोष साहित्य, मनोरंजन, कृषि, पाकविया आदि समस्त विषयों की जानकारी मौजूद है। उपयोग कर्ताओं को जितनी ज्यादा जानकारी होगी उतनी ही तीव्रता से अपने आविष्कार के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकते है। मनुष्य ने जीवन में मनोरंजन को खास जगह दी है। बिना मनोरंजन के जीवन में नीरसता आ जाती है। मनोरंजन मन को प्रसन्न कर देता है। इन्टरनेट पर मनोरंजन की अनेक विधाए खेल आदि प्राप्त है जो मस्तिष्क को तरोताजा बनाये रखती है व मानसिक मनोरंजन देती है।

**सन्दर्भ**

(1) चन्द्रकांत सरदान्स, कृ. जि. मेहता, पृष्ठ 44 जनसंचार–कल, आज और कल ज्ञानगंगा, दिल्ली।

(2) वही पृष्ठ–61, 62

(3) कुमुद शर्मा, जनसंपर्क प्रबन्धन, पृष्ठ 103 ज्ञान गंगा दिल्ली ।

(4) वही पृष्ठ 42

(5) चन्द्रकान्त सरदाना, वहीं पृष्ठ 71

(6) एम. के. गुप्ता जनसंपर्क, पत्रकारिता और सूचना कान्ति, अविष्कार पब्लिसर्स

(7) कुमुद शर्मा, वही, पृष्ठ–71, पृष्ठ–78

(8) चन्द्रकान्त सरदाना, यही पृष्ठ 88

(9) कुमुद शर्मा, वही पृष्ठ 81

(10) चन्द्रकान्त सरदाना, वही पृष्ठ–95

(11) कुमुद शर्मा, वही पृष्ठ–98

(12) एम. के. गुप्ता–यही पृष्ठ–125 126

(13) डा. यू.सी. गुप्ता, पत्रकारिता के विविध आयाम, अर्जुन पब्लिशिग हाऊस, पृष्ठ 87,